

* श्रीहरिः *

ईसाईमतमर्दन

नवरत्न कमेटीके प्रेसीडेन्ट व हिंदू

सम्प्रदायके आचार्य भारतहितेच्छुक

द्वंद्वराजभक्त, प्रजाशुभचिन्तक,

विमलार्य्य वंशज

स्वर्गवासी

मिस्टर दलाकटानन्द सरस्वती

ने लोकोपकारार्थं बनाया ।

पञ्चमवार	}	सं० १९७४ वि०	{ मूल्य.) ॥
१०००		सन १९१७ ई०	

Printed by B. D. Misra at the Brahma
Press—Etawah.

ईसाई मत मर्दन ।



दोहा-ईसा को ईश्वर कहें ईसाई अज्ञान ।

सब पापिन को पाप ले ईसा दीनों मान ॥

लावनी रंगत खड़ी इंजील खण्डन ।

देखी सब इज्जील खूबसी पोल नज़र में आई है ।

कोई न पढ़ना फन्दमें इनके जाली मत ईसाई है ॥८॥

मत्ती रचित इज्जील बाब दुसरेमें ये लिक्खा है कलाम ।

मुल्क यहूदाके भीतर एक बना है देखो बैतुल ठाँव ।

वहाँ एक रहता था यहूदी इसम था उम्माद की उभराम ।

थी उसके एक लड़की देखो लड़कीका था मरियमनामा ।

शेर-था यहाँ यूसुफ को बढ़ई नज़र लड़की पर पड़ी ।

चाह उस लड़की की पैदा हो गई दिल में बड़ी ॥

अदा उस के हुस्न की यूसुफ के दिल में आगड़ी ।

क्याह इसके संग कल ये फिक्र करता हर बड़ी ॥

शादी मरियम की यूसुफ सङ्ग हुई खबर ये पाई है ।

कोई न पढ़ना फन्दमें इनके जाली मत ईसाई है ॥९॥

हमल पेशतर से वो रहगया जावके सरियम थी कांरी ।
फिर आई यूसुफ के घरमें सुनो हकीकत अब सारी ॥
जो देखा यूसुफ ने हमल से लंगा फिकर करने भारी ।
अगर छोड़ूँ मैं इस को तो होवेगी बहुती खारी ॥
अर-फिर उड़ाई बात ये रुहउलकुदुस् का है फज़ल ।

पाक रु से रहगया सरियम के कायम वो हमल ॥
हमल जिसको रहगया तासीर से कर के दखल ।
पाक कैसे हम कहें उस रुह को देखो असल ॥
विना मद संग सोये औरत कहां से लड़का लाई है ।
कोई न पड़ना ॥ २ ॥

हमल दो ले सरियम घर आई जब यूसुफ का सुला भरम ।
हुआ बहुत आफसोस वो यूसुफ को पैदा हुआ रंजोअलम ॥
फिर आई तदजीर नज़र एक यूसुफ ने की तजके गम ।
लगा करन नशहूर सबोंसे यूसुफ खा करके वो कसम ॥
अर-आज की अब वो फिराते ने खुदा के आन के ।
पाक जोरु है तेरी मुझ से पाहा पहिचान के ॥
तू उसे घर में बुला ले बात मेरी मान के ।
कुछ जरूर इसमें नहीं रह साथ शेखी आन के ॥

करामात से जनेगी बच्चा कुदरत देख सुदाई है ।
कोई न करना ॥ ३ ॥

बिना तुलन कोई दरखत भी होता है मज़बूत नहीं ।
इसी तरह से औरत लड़का जन सकती वे मृत नहीं ॥
बिना मृत पैदा देखो बस हुआ कोई जिन भूत नहीं ।
तुम कहते वेमृत हुआ ईसा ये कोई साबूत नहीं ॥
शेर-हे लिखा बैद्यकमें भी बिना बीज नहीं होता शजर ।

और हिकमत में लिखा है देख लो करके नज़र ।
और देखो डाक्टरों में है लिखा ये ही जिकर ।

द्विना सोहनल सरदकी औरत जने कैसे पिसर ॥
जाल में मछुओं का देखी देखी गप्प उड़ाई है ।
कोई न मरना ॥ ४ ॥

फिर झुल्लू सरियस को लाया घर में अपने बुला शिताब ।
ताब फेर भूखों पर अपनी दिया रकीवाँकी ये जवाब ॥
भूले हो किस भरममें तुम सब होगे इन बातोंमें खराब ।
हमल रह गया सरियसके वो बिना तुलन कुदरत जनाब ॥
शेर-हो यकी इनको गया सुनकर फिरिस्तेकी जवान ।
जनेगी बच्चा करामाती ये सरियस नौ जवान ॥

उची पर फिरते हैं दीवाने येही वो लाकर इमान ।
 आफ़लकी खो फरके अपनी भूँठ करते हैं वयान ॥
 हैं भूँठे ये सुनो वनावट की सब बात बनाई है ।
 कोई न पढ़ना ॥ ५ ॥
 है ये वनावट ईसा को वस खुदा ये फरके गाते हैं ।
 और वारिश भी खुदा का देखो ईसा को बतलाते हैं ॥
 खुदा उसे खुद कहें और उसका बाप खुदा समझाते हैं ।
 मगर नहीं परदादा उस का ये बातें फरमाते हैं ॥
 धेर-हैं नहीं चलते ये सीधी राह सच्ची जान के ।
 मानते ना हुक्म उस का शिष्य ये शैतान के ॥
 मानते ईसा को बेटा ये खुदा का मान के ।
 कब खुदा सोया था मरियमके कहो संग आनके ॥
 कौन से सनमें कहो खुदा की मरियम बनी लुगाई है ।
 कोई न पढ़ना फन्दमें इनके जाली मत ईसाई है ॥ ६ ॥
 खुदाको बाहिद सब कहते हैं नहिं उसके दादा न पिदर ।
 नहीं बचा न भाई कोई नहीं खुदा के है वो मदर ॥
 नहिं बेटों नहिं बेटा उस के ना जोहू ना विरादर ।
 फिर बेटा किस तरह खुदाके हुआ कहो यह कौनसा घर ॥

शेर-यों तो बेटा सुन खुदा का सब सकल संसार है ।

है पिता वो जगत् का सब का करे उपकार है ॥

तुम कहो लड़का हुआ तो भूँठ ये गुफार है ।

है न कोई तस्वीर उस की औ न कोई आकार है ॥

वे नज़ीर है खुदा न उस की नज़ीर कोई पाई है ।

कोई न पढ़ना० ॥ ७ ॥

फरक है इन अन्धोंकी अकल में कियेको अपने पावेंगे ।

कुफर बोलते हैं ये जवां से नरक में डाले जावेंगे ॥

पकड़ फरिश्ते बांधके इन को दीज़ख में ले जावेंगे ।

छुरी कटारी सर पर इन के वो पत्थर बरसावेंगे ॥

शेर-है मत्ती इल्लील दुसरे बाव में देखो जरा ।

जब हुआ ईसा जवां शैतान के कबजे करा ॥

फिर सहे सदर्मे हजारों और देखो दुख भरा ।

बस मिला पानी नहीं औ भूख के मारे मरा ॥

मिली न रोटी ईसा को और दारुण विपत उठाई है ।

कोई न पढ़ना० ॥ ८ ॥

बड़ी हंसी आती है सुनकर ईसाई जी सुनो जनाब ।

मरे खुदा होकरके भूखा औ ना मिले पीनेको आब ॥

कैसा है वो खुदा जो खुद मौलाज बना रहता बेताब ।
 मदद औरकी कब कर सकता इसका दीजे हमें जवाब ।
 मेर-है बड़ा अफसोस सुनके और है हैरत कमाल ।
 पादरी जितने हैं देखो है मेरा उन से सवाल ॥
 जो करामाती था ईसा क्यों मरा कीजे खयाल ।
 क्रूस पर खींचा गया क्यों हाल वो करके बेहाल ॥
 एली एली क्यों चिल्लाया भेली बिपत सवाई है ।
 कोई न पड़ना ॥ ९ ॥

और हाल आने सुन लीजे कान लगा ईसा का यार ।
 करी बसर जिसतरहसे अपनी सम्पूरण सुनिये विस्तार ॥
 कहींपै गाली कहींपे देखो पड़ी खूब घूसों की नार ।
 कही घपत ईसा के सर पर जड़ी किसीने वेशुम्मार ॥
 मेर-गये निकाले शहरसे कहीं करके वो खूबी जो खार ।
 और कहिं कोई पड़े तन पर हुये वो बेकरार ॥
 बस बजी ताली कहीं औ हंस रहे नर और नार ।
 और कहीं खरपर किया ईसाको वो देखो सवार ॥
 कहूं कहा तक जो जो खारी ईसा ने करवाई है ।
 कोई न पड़ना ॥ १० ॥

अधजतरैका खुदा है इनका अजब है जिसकी शौकतशान ।
 ऐसे खुदापर फखर ये रखते दर २ करते फिरें वयान ॥
 ये कहते हैं पाप हमारे जितने थ सब की कर हान ॥
 सजा मसीने चढाई इनकी जरा हिलाई नहीं जवान ॥
 और-जब कि वो शैतान दुश्मन बस हमारा हो गया ।
 ती गुनाहों से भरा आलम वो सारा हो गया ॥
 फिर खुदा के रहस का सब पर नजारा हो गया ।
 और आलम में पिसर भेजा वो प्यारा हो गया ॥
 शिकममें रह नौ मास गिजा नापाक जो उसने खाई है ।
 कोई न बड़ना ॥ १९ ॥

बाहर निकला शिकमसे ईसा लगा वो करनेको तूफान ।
 अदल खुदा का किया वो पूरा आप देखो कुर्वान ॥
 है कैसा इन्साफ काहो ईसाई क्यों बनते नादान ।
 सरासरी वे अकली है ये सोच तो लीजें धरके ध्यान ॥
 और-गुनः तो कोई करे बस पांदरी जो सरबसर ।
 उस गुनःकी सजा पावे पिसर खालिक का मुकर ॥
 है लिखा कानून में बस जो करे जैसा बगर ।
 है सजा मिलती उसी को औ न दुसरे की मगर ॥

करे कोई और पावे कोई ये अन्धेर सवाई है ।

कोई न पढ़ना० ॥ १२ ॥

देखो ये अन्धेर भाइयो चोरी करे कोई इन्सान ।

उसकी सजा में देखो यारी खुदा मरे दे अपनी जान ॥

हेसा अहसक खुदा है इनको जरातो अथ लीजे पहिचान ।

जानका अपनी खुद दुश्मन थी कैसे लावे कोई ईमान ॥

शेर-अकल पर परदा पड़ा है वे अकल हैं वे अकल ।

है अदालत में वो जिसकी देख ले ऐसा अदल ॥

देखिये अथ ये हिकायत अस जरा कीजे नजर ।

है करेबी मरु जिसमें वक्त भरा धिलकुल धो बल ॥

खुदा के ये जोरु बतलाते मत इनकी खौराई है ।

कोई न पढ़ना० ॥ १३ ॥

सिवाय इसके सुनिये सांहव और भी धहुतेरे हैं मुकाम ।

जहां लिख रखे कलान ऐसे झूठनहीं कहताहूं खुदाग ॥

और सूत एक नौजवान था बात ये हैगी जाहिरआन ।

बहुत मेहरबी खुदाकी उसपर दोवेटी थी उसकीयान ॥

शेर-सूत जो करता इबादत था सवरे और शाम ।

जब हुई गालिबजी सोहवत फिर जबा आकरके काम ॥

पीके फिर देखो बरंही औ गरावों के वो जान ।
 फिर लगे करने वो अपनी वेदियों सेती हराम ॥
 आजब मुकद्दस किताब इनकी छलसे भरी भराई है ।
 कोई न पढ़ना० ॥ १४ ॥

औरहाल उस घरका सुनलो जिसमें ससीहकाथा औतार।
 किताब दुसरी सलातीन की बाब ये तिसरेमें इजहार।
 पुरखों में हजरत के थे दाऊद शाह बहुती हुशियार ।
 पिसर एक एमन था उनका जवांका या देखो तरार ॥
 सैर—बस वो एमन के हती हमशीर एक रशके कमर ।

थी परी पैकर की सूरत पड़ी भाई की नज़र ॥
 बहिन पर भाई हुआ आशिक ये पाई है खबर ।
 हाथसे उसको पकड़ली पायके सूना वो घर ॥
 कुदृष्टि देखे बहिन की भाई जरा शरम नहिं-आई है ।
 कोई न पढ़ना० ॥ १५ ॥

और बापकी उसके हकीकत सुनो भाइयो कान लगाय।
 जब आया जवानीका आलम घेरलिया फिर झुकनेआया॥
 एकदिन करने सैर वो हजरत शहरके अन्दर निकलेआया।
 लगे देखने इधर उधर को वेताबी से आंस लड़ाय ॥

शैर—बहुत थे बेताब हज़रत निगह जा छत पर पड़ी ।

एक परी पैकार से देखो नज़र हज़रत की लड़ी ॥

थी बज़ीर उनकेकी औरत जो थी कोठे पर खड़ी ।

देख कर होगये आशिक दिलीजां से उस घड़ी ॥

काम ये खोटे करें पयम्बर उनके धूल उड़ाई है ।

कोई न पढ़ना० ॥ १६ ॥

फिर हज़रत करके मसूखा बज़ीर को बुलवा उसदम ।

करके बहाना जंगका उसको किया खाने देके हुस्न ॥

या वो बेगुनः बज़ीर उसका करवा डाला सीस कलम ।

औरत उसी को घरलाये देके हज़रत उसको दम ॥

शैर—करधियोंका वाब पंजुम बीस आयतमें ये जाल ।

देख लीजे है लिखा बस दूर कर दिलका नलाल ॥

एक पिन्हा जोड़ा शहाना औ गले मोतीकी माला ।

बस बना जोरू उसे हज़रतने ली घरमें वो डाला ॥

ऐसी हंरकत कर बेजा फिर दिखलाते सच्चाई हैं ।

कोई न पढ़ना० ॥ १७ ॥

सुनी उन मसीहोंका हालजो मुल्ककर मिथ्यामें घेरहंग ।

इसां के उनके देखो यारो सुनी सुनाता हूं मैं दंग ॥

अरम मुझे कहते आती है हाल यहां पर है ये ढंग ।
 थरज बहुत सी ऐसी शेखियां हैं इनकी ये हैं सतभंग ॥
 और-देख लो मजमूं मुकद्दस है रिसालों का भरा ।
 जिक्र इनकी पुस्तकों में बस रिजालों का भरा ॥
 हाल मैनीशी का है सब ढंग जालों का भरा ।
 हैं जो ऊपर से दो गोरे दिलके कालों का भरा ॥
 जिक्र दोगलों का किताब में हक की कहें बनाई है ।
 कोई न पढ़ना० ॥ १८ ॥
 शिकेमेनट एक ईसाइयों का देखो प्यारी है त्योहार ।
 सब से बुरा ईसाई उसमें करते हैं देखो व्योहार ॥
 अञ्जल तो ईसा का ये खाते हैं मांस खुश होकरयार ।
 फिर पी लेते खून को उस के ईसाई ऐसे मक्कार ॥
 और-गौर कीजे भाइयो अब इनके देखो प्यार को ।
 मांस ईसा का ये खाते मांस में दो बार को ॥
 उस कहीं होता है ऐसा देख लो संसार को ।
 मार के खा जायें अपने गुरू और मुख्तयार को ॥
 भंग भई मत ऐसी इन की कैसी चाल चलाई है ।
 कोई न पढ़ना० ॥ १९ ॥

क्या वो पड़ा खाने को बाकी काय तक खाये पावेंगे ।
 कितना बड़ा कद था ईसा का ईसाई बतलावेंगे ॥
 कितना लम्बा चौड़ा है नापेंगे पता लगावेंगे ।
 मांस खाये ईसा का ये हड्डी पर दांत जमावेंगे ॥
 शेर ॥ जो कोई पूछे तो कहते कुछ न जिज्जमानी है ये ।
 है जो ये खाना हमारा फकत रुहानी है ये ॥
 बस यही शरसीस है निकले सुनो जानी है ये ।
 रुह कुत्ते की है इन की हमने पहिचानी है ये ॥
 नहीं ये करना रयां है तुमको नसिहत यही सिखाई है ।
 कोई न पड़ना ॥ २० ॥

तुम जो ईसा के तार्वं यारो देखो खा जाओगे ।
 फिर वो सिकारिशकीखातिर कहो किसके तार्वं लावोगे ॥
 कौन दिलावेगा नजात बस किस को पेश कराओगे ।
 सुनः वो अपने फिर देखो किसके सिर पर लदवाओगे ॥
 शेर ॥ छोड़ दो ईसाइयो सब बस ये क्या दस्तूर है ।
 कुफ़ ये एक किसस का बस सरासर भरपूर है ॥
 है जो गिरजा घर अखाड़ा इन्द्र का सशहूर है ॥
 कब वो खाने खुदा ही बैठी जहां पर दूर है ॥

कहीं जड़ी तसवीर कहीं पर कुरसी नेज विछाई है ।

कोई न पड़ना० ॥ २१ ॥

कहीं पलेट रखे हैं देखो कहीं रखे घम्मच नायाब ।

कहीं लवंगडरकी शीशी वो पड़ी हुई नहीं झूट जनाव ॥

कहीं पै मोड़े कहीं पे कुरसी और कहीं रखे असदाब ।

कहीं पे रम रखी है देखो कहीं बरन्ही रखी शराब ॥

शेर-हैं वो गुलदस्ते रखे और कुमकुमे भी नेज पर ।

लग रहे फानूस हांडी बस कहीं वो दर च दर ॥

कारचोबी का कहीं कालीन वो समदा चुघर ।

सब तरह की खूबियां आती नजर देखो जिधर ॥

मो गातो हैं गजल होलियां लेडी ला, बैठाई है ।

कोई न पड़ना० ॥ २२ ॥

अगर पादरी खुशमिजाजही लगे वो दाजे वजन सिजल ।

लगीं लेडियां गाने देखो सिंध भैरवी और गजल ॥

राग रंगका समां सांध नखरे दिखलातीं नचल नचल ।

बानू जितने कारकी खुशामद विठलाते हैं उछल उछला ॥

अर-बख ये करती इस गरज से हैं तमाशे जो ये बख ।

फंस वो जाँवें जालमें कोई वो आकर किसी डूब ॥
 जातुओं का हाल सुनिये भाइयो कहता हूँ अब ।
 तेली तमोली गड़रिये जाबू बने वो बदुल कल ॥
 तनखाहों के लालच में इन लज्जा शरन गंवार्हे है ।
 कोई न पड़ना० ॥ २३ ॥

अमल ग्रहनशानी में जो कोई होते ये दीन इसलाम ।
 जब तक जीवें रोटी कपड़ा और निलते खरचनलो दाम ॥
 अब जो ईसाई होते हैं खाने को नहिं मिलता ताम ।
 फिर दरबदर मारे २ भीख मांगते सुवा और शाम ॥
 घर-भीरु भी निलती नहीं बस वो गये सब कार से ।
 है कटी पतलून पहने फिर रहे लाचार से ॥
 छूट जो सब से गये भाई लुटुन्व परिवार से ।
 हो गये विलकुल शालम देखो सभी घर द्वार से ॥
 समार कीरी और किरानी बना वो भंगी नार्हे है ।
 कोई न पड़ना० ॥ २४ ॥

अब आस्तुति करता हूँ उसकी परब्रह्म जो है करतार ।
 भीष मुकाता हूँ मैं उसको जनस्कार कर बारम्बार ॥
 है वो सकल पालन करता श्री सबका दोही मुख्त्यार ।

दोस्त और दुश्मनका भी पलमें करदेता है निस्तार ॥
 शेर-दाँद सूरज की उसी ने है किया रौशन बड़ा ।
 श्री सितारों से अजब है आसनां देखो जड़ा ॥
 की सुवत्तर ज़मी गुल से घर्ल बेहूनी खड़ा ।
 है वो आदिल और मुन्तज़ हुक्म है उसका कड़ा ॥
 उसके न्यायकी कोश किसीसे हिलती नहीं हिलाई है ।
 कोई न पड़ता ॥ २५ ॥

दयालो करके वेद अष्ट किये चार भागमें चार हैं वो ।
 भेद गुप्त देवों ने खोला सब के प्राण आधार हैं वो ॥
 रंक राव सुहृत्ताज हैं उसके करते जान निहार हैं वो ।
 पीर पयश्चर सारे श्रीलिया उस के तावेदार हैं वो ॥
 शेर ॥ हैं कितारें जाल की सब जाल का विस्तार है ।
 छोड़ राज की वेद मानो ये रचित करतार है ॥
 वन न कोई मुल्क की विद्या न कोई गुलार है ।
 जो न भले वेद की पैतान वो सकतार है ॥
 कहीं विलासत अमुदयाल की सही बात सुनाई है ।
 कोई न पड़ना फन्दसे इनके जाली सब ईसाई है ॥ २६ ॥